॥ श्रीः ॥

ज्ञानमाला

जिसमें
श्रीकृष्णचन्द्र परब्रह्म ने आचारानुरागियों
के उपकारार्थ बहुधा आचार धर्म अपने
प्रिय भक्त अर्जुन से १२५ शिक्षाओं में
उपदेश किया है सर्वजनों को
अति प्रिय होने के कारण

जिसको
यन्त्रालय के श्रेष्ठ विद्वानों ने अतिपरिश्रम से शोधा

द्वितीयबार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा
सन् १९१२ ई० ॥

श्री:
दोऊ



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ज्ञानमाला ॥

एक दिन राजा परीक्षित गद्दी पर बैठे थे ता समय श्रीव्यासजी के पुत्र श्रीशुकदेवजी आये राजा देखतेही सिंहासन से उतर खड़ा हुआ और ऋषि के चरणारविन्द में गिरके साष्टाङ्ग दण्डवत् की फिर बड़े आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थान में लेजाकर रत्नजटित सिंहासन पर बैठाय दोऊ चरण-कमलन को धोकर चरणोदक लिया और विधि-पूर्वक पूजन करके नानाप्रकार की सामग्री भोजन कराई और घण्टानाद सहित आरती उतारी तब तो राजा के मन की लग्न देख श्री-शुकदेवजी प्रसन्न भये ता समय राजाने दोऊ

कर जोड़के बिनंती कीनी कि हे कृपासिन्धु, दीनदयालु ! आपकी कृपा से सदैव वेद और पुराण के सुननेसे मेरे हृदय में चांदना होता है और मन को आनन्द प्राप्त होता है परन्तु अब मेरे मन में संदेह प्राप्त हुआ है कि संसार में ऊँच और नीच दोऊ कर्म हैं सो आप कृपा करके इन दोनों कर्मन के भेद भिन्न २ मोसों कहो और मेरे मन का संदेह निवारण करो राजा का यह प्रश्न सुनिके श्रीशुकदेवजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा दी कि हे राजन्! तेरे प्रश्न में संसारी मनुष्यों को बड़ा लाभ है और जो यह संदेह तेरे मन में उपजा है सोई अर्जुन के मन में उत्पन्न हुआ था सो श्रीकृष्ण जी ने वाके प्रश्न का उत्तर दिया है सोई मैं तेरे आगे कहता हूं मन देके सुन ॥

श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित से कहते हैं कि हे राजन् ! एक दिन प्रातःकाल श्रीकृष्ण जी अर्जुन के घर पधारे खबर पाई कि अर्जुन सोवे हैं यह बात सुनके श्रीकृष्णजी अचम्भे में रहे फिर अर्जुन ने महाराज श्रीकृष्णजी को स्वप्न में देखा और तुरन्त जाग उठा तब सेवक ने अर्जुन से कहा कि हे स्वामी ! श्रीकृष्णजी पधारे हैं यह सुन अर्जुन दौड़कर श्रीकृष्णजी के चरणारविन्दमें गिरा और दण्ड-वत् करके दोऊ कर जोड़ बिनती की कि हे सच्चि-दानन्द, जगदीश ! मोसे यह अपराध अन-जाने बन पड़ा है सो आप क्षमा करो और मेरी रक्षा करो यह सुनके श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा अर्जुन ! तू बड़ा बुद्धिमान् है और ज्ञानी है या समय तोको मैंने तो स्वप्नअवस्था में देखके

बहुत शोच किया क्योंकि मनुष्यदेह बहुत कठिनता से प्राप्त होती है सो या देहको पाके ऐसे समय में सोवना बुद्धिमान् को योग्य नहीं है यह वचन श्रीकृष्ण के सुन अर्जुन ने फिर बिंनती करिके प्रश्न किया हे दीनदयालु, दीन-बन्धु! जो अपराध सेवक से अनजाने बन आया है वाको कृपादृष्टि से क्षमा करके अब आप आज्ञाकारी से आज्ञा करो कि कौन २ से अहितकारी कर्मन का त्याग करना अवश्य है तब श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि हे मित्र! जो बातें वेद में गुप्त हैं और देवताओं ने जानी नहीं है सो तेरे आगे कहता हूं मन लगायके सुन और इन बातों का तू वा और कोई सुनके या पढ़के अङ्गीकार करेगा सो पापके बन्धनसे छूटके मुक्ति को पावेगा श्रीकृष्णजी कहते हैं॥

१ पहली शिक्षा। हे अर्जुन! प्रातःकाल जिस समय श्रीसूर्य उदय होयँ मनुष्य को सोवना योग्य नहीं है क्योंकि एक पहर रात्रि बाकी रहे पर देवतों का आगमन होता है इसलिये मनुष्य को चाहिये कि दोचार घड़ी के सबेरे उठके परमदयालु परमेश्वर के ध्यान में मन लगायके भजनानन्द में मग्न रहे और अरुणोदय होय जब स्नान करके श्रीसूर्यनारायण को जल अर्पण करके दण्डवत् करे और पितृदेवतों को जल देइ तो जलग्रहण करिवे सों सूर्यदेवताजी और पितृदेवता बलवान् होयके प्रसन्नता सों आशीर्वाद देवें जो मनुष्य इस विधि सों अङ्गीकार करेंगे सो इस लोक परलोक का सुख भोगेंगे॥

२ शिक्षा। हे अर्जुन! एक चारपाई के

बिछौने पै अपनी स्त्री के सिवाय किसी दूसरे के सँग सोवना पापका मूल है क्योंकि विवाहिता स्त्री तो अर्द्धाङ्गी सब पाप और पुण्य में सँग आती है परन्तु वा तेरे और दूसरा अपने बिछौने पर सोवे तो वह भी पाप पुण्य में साम्ही हो यह सुनके अर्जुन ने हाथ जोड़के प्रश्न किया कि हे कृपालु, करुणानिधान! जो कोई नैतेती अपने घर आवे और उसके पास बिछौना नहीं होय तो क्या करना उचित है? तब श्रीकृष्ण ने कहा कि उस नतैती को उचित है कि जो अपने समान अङ्ग के अपना वस्त्र बिछौनेपै बिछाके उसपर सोवे तो कुछ दोष नहीं होय॥

३ शिक्षा। हे अर्जुन! विधवा स्त्री के हाथ सों रसोई पावना बड़ा दोष है क्योंकि जिस

स्त्री का पति मरजाय वो अधजल मुर्दे के समान होजाती है इस कारण उसके हाथ से रसोई पावना महापाप है ॥

४ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो कोई संध्या के समय घरके आंगनमें झाड़ू देताहै वह अवश्य दरिद्री होता है क्योंकि वही समय लक्ष्मीजी के गमन करने का घर २ है जिसके हाथ में झाड़ू देखे हैं लक्ष्मीजी वाको शाप देके गमन नहीं करें ॥

५ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य एकादशी या और कोई व्रत धारण कर और स्त्री के पास जाय तो व्रत को फल नहीं पावे यह सुनके अर्जुन ने दोऊ कर जोड़के प्रश्न किया कि हे जगदीश ! व्रत के दिन जो स्त्री त्रिदोष कर्म ते निश्चिन्त होके स्नान करे और पुरुष

वाके पास जाय नहीं तो महापातकी होय और जाय तो व्रत निष्फल हो या पर क्या करना चाहिये श्रीकृष्णजी ने कहा कि अर्द्धरात्रि बीते पर जाये तो कुछ दोष नहीं क्योंकि रात्रि के दोपहर पिछले अगले दिनके गणित में हैं ॥

६ शिक्षा । हे अर्जुन ! रात्रि के समय दीपक की बाती जलने से बाकी बचे तो वा मरी बातीको दूसरे दिन जलावे तो महापाप है यही पाप से वा मनुष्य की स्त्री बांझ बहुत काल रहेगी अर्जुन ने जब श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से यह शिक्षा सुनी बहुत पश्चात्ताप कीनो और चकित भयो फिर दोऊ कर जोरिकै बिनती कीनी कि हे अनाथ के नाथ, दयासिंधु, वासुदेव ! आपने जो शिक्षा कीनी उनके सुननेसे दास के मनमें अतिआनन्द प्राप्त भया

है कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये ॥

७ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य सूर्य के सन्मुख होके दन्तधावन और कुल्ला करे तो महापातकी होय और अन्तकाल नरक में जाय जानना चाहिये कि देवतान में ये तीनों देवता बड़े हैं जो मनुष्य प्रीति की रीति से इन का पूजन सदा करता रहे तो वाको यज्ञ करबे को फल प्राप्त होयगो अर्जुनने प्रश्न किया कि हे घनश्याम, चतुर्भुजस्वरूप ! इन तीनों देवताओं का पूजन किस विधिसे प्रतिदिन करना चाहिये सो कृपा करके आज्ञा करो श्रीकृष्णजी ने कह्यो विधिपूर्वक सूर्यनारायण को इतवार को व्रत धारण करे और व्रत न राखसके तो वा दिन नोन नहीं खाय और प्रातःकाल स्नान करिके श्रीसूर्य को तांबे के पात्र सों जल अर्पण

करके दण्डवत् करे (अग्निदेवता पूजनविधि) प्रातःकाल स्नान करके अपने इष्टदेव को ध्यान अरु स्मरण करे फिर शर्करा, घृत, तिल, यव सामग्री से अग्निदेव को पूजन करे और जो या भांति नहीं करसके तो रसोई होजाय तब रसोई की सब सामग्री से पूजन करे विधि पूजन जलदेवता प्रातःकाल स्नान करिके जलदेवता पै धूप चढ़ावे और चन्दन, चावल, पुष्प चढ़ाके मिठाई अर्पण करे (इति पूजन) प्रतिदिन जो मनुष्य इसभांति इन तीनों देवताओं को पूजन करे तो इनके आशीर्वाद सों इस लोक में धन सन्तान परलोक में वैकुण्ठ धाम पावे॥

९ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य को चाहिये कि जलते भये दीपक को बुझावे नहीं और

जो कोई पुरुष दीपक सों दीपक जोड़े तो पातकी होय ॥

९ शिक्षा। हे अर्जुन! व्रती मनुष्य चारपाई पर सोवे तो व्रत निष्फल जाय क्योंकि जिस देवता को व्रत धारण करे सोई देवता व्रत के दिन मनुष्य की देह में बास करे है इस लिये जो व्रती व्रत के दिन स्वच्छता से रहे और चारपाईपर सोवे नहीं पृथ्वी पर सोवे स्त्री से अलग रहे एकबार फलाहार करे कुछ ब्राह्मण को देवे तो देवता प्रसन्न होके आशीर्बाद देवे और व्रत फलदायक हो ॥

१० शिक्षा। हे अर्जुन! व्रत के दिन किसी को अपनी जूठन देनी न चाहिये क्योंकि जो कोई जूठा खायगा सो व्रत के फल में भागी होगा यह बड़ा दोष है ॥

११ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य रसोईं मध्य में अर्थात् कछु सामग्री बाकी बनानी रह गई होय जल्दी करके रसोईं खाने लग जाय वा जबलों रसोईं की सामग्री तैयार नहीं होसके और अग्निदेव को भोजन न कराय्ले किसीको रसोईं में से अग्नि न देवे या रसोईं में. थाली आदि कोई पात्र नहीं होय और रसोईं की सामग्री को पृथ्वीपर धरदेवे तो उन तीनों पापन को कारण जो इनमें से एक २ न्यारो महापाप से वह मनुष्य सदा दरिद्री रहेगा इसलिये मनुष्य को अवश्य है कि जब रसोईं में सब सामग्री तैयार होजाय तब स्वच्छतासों प्रथम आसन पै चौरस बैठके अग्नि मुख के द्वारा पूर्णब्रह्म परमदयालु परमेश्वर को भोजन करावें फिर अन्नदेव को नमस्कार करे फिर

एक अभ्यागत को रसोई की सब सामग्री भो-
जन करावे और जो सामग्री नहीं होय तो थोड़ी
सब सामग्री अभ्यागत के निमित्त अर्पिके
आप रसोई भोजन करे तो इस महापुण्य के
प्रताप सों अग्नि महाराज और अन्नदेव से
आशीर्वाद पाइके वह नर सदा सुखी रहेगा ॥

१२ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य तांबे के पात्र को जूठन सों अशुद्ध करे वा अशौच स्थान में लेजाय सो अन्तकाल नरकबासी होय क्योंकि सब धातुन में तांबा महापवित्र है इसलिये जो मनुष्य तांबे के पात्र में जल भरके स्नान करेगा तो गङ्गाजल के समान महापुण्य है तिल अरु जल अर्पण करे तो महापुण्य है ॥

१३ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य ब्राह्मणी

वा और परनारिन से मैथुन करे और वाके बिन्दुसे कदाचित् किसी स्त्री को गर्भ रहे और पुत्र पैदा होय तो वा पापी मनुष्य के पितृदेव जो अपने से सुकर्म भोगने के कारण वैकुण्ठ धाम में बास करते होयँ सो वैकुण्ठ से नरक में ब्रास करें व्रत तर्पण श्राद्ध में सदा विमुख रहे यह पाप सब पापन सों भारी है ॥

१४.शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य स्त्रीसों सङ्ग करिके अपवित्र रहे इस पाप से अन्त-काल नरक में जाय इसलिये कि उसका पाँव पृथ्वीपर धरना ऐसा है जैसा पितरन के शिर पर धरो ॥

१५.शिक्षा । हे अर्जुन ! अमावास्याको वृक्षकी डाली और पत्ती को तोड़ना ब्रह्महत्याके समान है और वा दिन दन्तधावन करनाभी अयोग्यहै

१६ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो कोई परदेशी या अभ्यागत कुछ याचना करे तो अपनी श्रद्धा[1] के अनुसार वाको देवे विमुख न जानेदे तो महापुण्य है ॥

१७ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने घर में टूटी खाट फूटे बर्तन राखे सो दरिद्री होय है ॥

१८ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य नारायण का नाम लेके खाया पिया करे और चलते, फिरते, उठते, बैठते जो काम करे परमेश्वर का नाम लेके करे तो महासुकर्म के फल से इस लोक के और परलोक के सुखों का परम आनन्द पावे यह नेम महापुनीत है अरु जो मनुष्य चलते फिरते डगर बाट में बारम्बार मन में आवे सो ले खाय और परमेश्वर का

१ गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा ।

नाम उच्चारण नहीं करे तो इस पापसे विपत् के बन्धन से कभी नहीं छूटे ॥

१९ शिक्षा। हे अर्जुन! किसी मनुष्य के सङ्ग एक पात्र में भोजन करना बड़ा दोष है न जाना जाय पूर्वजन्म में वह मनुष्य कौन सी देह में था भोजन करने का कारण वाके पूर्वजन्म की प्रकृति याके अन्तःकरण में प्राप्त होजाय इसलिये ऐसे नीचकर्म को अङ्गीकार करना न चाहिये ॥

२० शिक्षा। हे अर्जुन! भोजन करने के समय अन्नदेवता मुख में पधारे हैं इसलिये मौन धरके भोजन करना उचित है क्योंकि बोलने बतलाने में मिथ्यावचन मुखसे निकले तो अन्नदेवके शाप से याही जन्ममें विपत्के बन्धन में बँध जाता है इसलिये मनुष्य को

अवश्य है कि एकचित्त होय चौरस बैठके दायें बायें न देखे और अन्नदेव की बड़ाई करते भोजन करे तो इस कर्म से सदा सुखी रहे यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगदीश, जगद्गुरु ! भोजन करते कुछ कहना किसी से अवश्य होय तो कैसे करना चाहिये श्रीकृष्ण जीने आज्ञादीनी कि बोलना अवश्य होय तो मन में अन्नदेव से प्रार्थना करके सच्चिदानन्द भगवान् का नाम लेके पांच ग्रास ले अरु आचमन करके बोले परन्तु किसीकी बुराई न करे और खोटा वचन न बोले ॥

२१ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपनी व्याहता अर्द्धाङ्गी परमहितकारिणी स्त्री से बिपरीत ठानके अपने मुखसे वाकी बुराई करे अरु खोटा वचन बोलके सबको दुःखरूपी

अग्नि में दहे इस पाप से इसलोक में तो सदा क्लेशके बन्धन में रहे और परलोक में नरक में जाके बास करे क्योंकि जिस समय ब्याहता स्त्री के गर्भसे पुत्र प्रगट होता है तिस समय उसके पितृदेव कदाचित् नीचकर्म के फलसों मांगबे को नरकबासी होय तो पापमोचन पुत्र की परम प्रसन्नता से नीचकर्मन के भोग तें मुक्ति पाय के वैकुण्ठ को सिधारे और बारम्बार आशीर्वाद किया करे इसलिये मनुष्य को चाहिये कि प्रेम प्रीति से ब्याहता स्त्री को राखे वह मन वचन करके अपने पति के समान सुन्दर और हितकारी किसी को न जाने क्योंकि ब्याहता पाप पुण्य की संगी है यातें वाके पापन सों पाप और पुण्यसों पुण्य की बढ़ती होती है और कदाचित् वासों कोई अपराध बन आवे

तो पुरुष को चाहिये वापै कोपदृष्टि न करे सदा प्यार से वाको शिक्षा देता रहे और वाके मनको सदा प्रसन्न राखे और शीलवती स्त्री को चाहिये कि अपने पति को ईश्वरके समान जान के निशिदिन वाकी सेवामें तनमन अर्पणकरें और पतिव्रतधर्म को सावधान राखे और पति कैसाही कठोर निर्दयी हो परन्तु वाको ईश्वर समान जाने जैसे सम्पत्ति में तैसेही विपत्ति में प्रसन्नता सहित पति की आज्ञा न मोड़े और दुःख सुखमें जिस विधि से परमेश्वर राखे रहे अपने प्यारे पीव की प्रसन्नता का उपाय करती रहे और अपनी श्रद्धा के अनुमान सुन्दर वस्त्र और आभूषण से अपने अङ्ग को शोभित करके पुरुष के मनको मुदित राखे जिसमें पुरुष का मन परनारिन पै न जावे

और अपने धर्म कर्म में सावधान रहे ऐसी विधिसों जो स्त्री पुरुष आपस में प्यार प्रीति सो रहें तो इसलोक में सुखों को भोग करें अरु अन्तकाल वैकुण्ठधाम पावें ॥

२२ शिक्षा। हे अर्जुन! दीपक या सूर्य की ज्योति से खाट की छाया मनुष्य की देह में पड़े तो दोष है ॥

२३ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य किसी को मूढ़ता वा और किसी प्रकारसों मारने का उपाय करे तो इस पाप से नरकबास होता है ॥

२४ शिक्षा। हे अर्जुन! रूखी रोटी घृत विना का भोजन करना बड़ा दोष है जानों प्रेत सङ्ग आया क्योंकि जिस रसोई में घृत विना सामग्री बने तहां प्रेत विघ्न करते हैं और उस घर में दरिद्र का बास होता है इसलिये मनुष्य

को उचित है कि रसोई में श्रद्धा होय जितना घी लाके रोटी खाय क्योंकि घृतगन्ध सों प्रेत बाधक नहीं होसकते ॥

२५ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य दीपक सों अग्नि बार के रसोई बनावे या कुछ और काम करे तो वाको दीपक शाप देता है और दोष है क्योंकि वह अग्नि मुर्दा की अग्नि के समान अशुद्ध है ॥

२६ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य प्रातः-काल वा संध्यासमय देहली पर बैठे तो वाके घर सों पुण्यदान हटे सम्पत्ति घटे और ऋण बढ़े ॥

२७ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो कोई प्रातः-काल कूड़ा पौली पैवा अहंकारी धनवान् की सम्पत्ति लक्ष्मीजी के शाप ते थोड़ेही दिन में जाती रहे ॥

२८ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य बाग़ और तालाब तथा नदीके किनारे पर दिशा जाय सो बहुत काल नरक में पड़े ॥

२६ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाय व्रत न राखे उसका जीवना पशुकेसमान है अन्तकाल पञ्चहत्याओं का अपराधी होय के नरक में बास करे इसलिये मनुष्य को उचित है कि एकादशी का व्रत धारण करे दिनभर श्रीदीनदयालु के ध्यान में रहे और रात्रि को जागरण करे तो उसके पापों का नाश होय और पितर स्वर्ग को जायँ यह सुनके अर्जुनने प्रश्न किया हे दयालु ! जो भूल से व्रत के दिन अन्न खाय तो वह इस पाप सों कैसे मुक्ति पावै ? श्रीकृष्णजी बोले भोजन करते भी जानो जाय फिर ग्रास न ले तुरन्त

भोजन को त्यागदे व्रत धारे त्तो व्रत का पूर्ण फल प्राप्त होय और जो कदाचित् निर्जल न राखसके तो गाय के दूध के सिवाय और कोई आहार न करे ऐसे व्रत का फल यज्ञ के समान है और एकादशी को अन्न खायबो कीड़े कें समान है जितने चावल खाय उतनीही हत्या शिरपै चढ़ैं और जो व्रत न राखसके तो भी एकादशी को चावल खाने का दोष है क्योंकि एकादशी को सारे पाप अन्न में बसते हैं अर्जुन इस गुप्तवार्त्ता को सुन कम्पित होकर महाशोक समुद्र में डूबगयो तब तो श्रीकृष्णजी ने वाको शोच अवस्था में दुःखी जान अतिदयालुता से वाके मन का क्लेश मिटायके आज्ञा की कि हे अर्जुन ! आजलों जो तोसों नीच कर्म बन आये तिस कारण यह गुप्तभेद तोसों प्रगट

कियो मन लगाय वाको अङ्गीकार कर जो तेरे काम आवे यह आज्ञा पायके अर्जुन ने श्रीकृष्णजी के चरणारविन्द में शिर नायके प्रसन्नता सहित दोऊ कर जोरिकै स्तुति की हे मधुसूदन, व्रजभूषण! जो आपने संसारसागर से उतरबे को यह शिक्षा नौकारूप मुखारविन्द से आज्ञा की जाकी महिमा गायबे को मेरा क्या उनमान है जहां शेष, दिनेश, वेदादिक पार न पासकैं सो हे नाथ! मेरी रक्षा करो अर्थात् और कुछ आज्ञा कीजिये श्रीकृष्णजीने अर्जुन को परम अधिकारी जानके आज्ञा की॥

३० शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य रजस्वला स्त्री सों मैथुन करे सो या पापन के कारण संसार में रोगग्रसित रहे और अन्तकाल नरक में जायके हज़ार वर्ष सों अधिक

बास करे कारण यह है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन चाण्डाली दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी तीसरे दिन धोबिन के समान होती है इन तीन दिनों में वाके वस्त्र छूने और मुख देखने में वाको पाप लगता है कदाचित् रजस्वला स्त्री के हाथ से मनुष्य कोऊ वस्तु को भोजन करे तो अपनी अवस्था में जितने पुण्यदान किये होयँ सो सब नाशको प्राप्त होयँ इसलिये मनुष्य को उचित है कि चौथे दिन शुद्धस्नान करे तब स्त्री के पास जाय और जो चौथे दिन में स्त्री सों सङ्ग न करे तो एक मनुष्य मारने की हत्या होती है यह सुनके अर्जुन ने बिनती की कि हे जगदीश, अन्तर्यामी! जो वा स्त्री को पुरुष परदेश होय तो वा पाप से कैसे मुक्ति पावे श्रीकृष्णजी ने कहा कि जो पुरुष घर में

नहीं होय तो स्त्री अवश्य स्नान करके सूर्य के सन्मुख स्थित होयके अपने पति की सूरत को मनकी आरसी में देख लेवे तो वाको पति या पापसों मुक्ति पावे ॥

३१ शिक्षा। हे अर्जुन! जिस मनुष्य को जीव किसी पदार्थ को भोजन मांगे वह जीव को विमुख राखे तो या दोष के कारण वह मनुष्य इसी जन्म में सदा दुःखी और निराश रहे फिर मृत्युसमय जीव वाही पदार्थ में जाय प्राप्तहो यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे नाथ! निर्धन मनुष्य जीव की प्रसन्नता कैसे करे? श्रीकृष्णजी ने कहा कि निर्धन मनुष्य की प्रसन्नता के लिये रविवार को जन्म नक्षत्र में वा अमावास्या के दिन श्रद्धा के अनुसार मनमाने पदार्थ भोजन

करे तो परमेश्वर वाकी कामना पूर्ण करे ॥

३२ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसी को कोई वस्तु पुण्य अथवा और भांति देनी कर लेवे कि भूलके या अहंकार के कारण नहीं देवे तो महापाप है अगले जन्म में देवेगा अरु वह मनुष्य बास परलोक में लेवेगा इसलिये मनुष्य को उचित है कि जो मुखसे कहे पूरा करे ॥

३३ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य कुछ लेके बेटी का ब्याह करे इस पापफल से सदा दरिद्री रहे और वाके पितृदेव तर्पण से विमुख हो नरक में जायँ ॥

३४ शिक्षा। हे अर्जुन ! कोई मनुष्य किसी सों कुछ मांगे और वह देवे तो या पुण्य को फल अश्वमेधयज्ञ के समान है क्योंकि जीव

की प्रसन्नता ही परमेश्वर की प्रसन्नता का कारण है ॥

३५ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य को चाहिये कि किसी से कुछ मांगे नहीं परमदयालु परमेश्वर ने जो दिया है वाही में सन्तोष राखे ॥

३६ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य कामना के अर्थ चारपाई या चौकीपै बैठके परब्रह्म जगदीश को पूजन करे तो फलदायक नहीं होय इसीलिये मनुष्य को उचित है कि पवित्र स्थान में ऊनवस्त्र, मृगछाला, कुशासन वा स्त्री सहित बैठके पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके त्रिलोकीनाथ के पूजन और ध्यान स्मरण में मनलगावे तो फलदायक होय ॥

३७ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य श्रीगङ्गा जी वा और कोई तीर्थ मूर्तिके स्नान दर्शन को

जायके परस्त्री पै कुदृष्टि करे तो या पापसों कभी नहीं छूटै और अन्तकाल यम के दूत वा पापी को नरक में लेजायके ताती सींक वाकी देही पै लगाके अनेकप्रकार सों वाको संताप देवें यह सुनके अर्जुन ने श्रीकृष्णजीकी स्तुति करके बिनती की हे वासुदेव, मधुसूदन, जगत्-गुरु ! कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये तासोंतम अज्ञान दूर होय अरु दीपकरूपी ज्ञान सों हृदय के महल में चांदना हो ॥

३८ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य श्रीगङ्गा जी के स्नान को पनहीं पहरे जाय तो गङ्गा-स्नान माहात्म्य नहीं पावे ॥

३९ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य चार मनुष्यों में बैठके कुछ सामग्री मँगाइके अकेला भोजन करे तो या पापसों मुक्ति नहीं पावे दोष है ॥

४० शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य इतवार द्वादशी अमावास्या को व्रत राखे खिचड़ी खाय सो पाप के कारण और पदार्थन सों विमुख रहे वाके सन्तान न हो ॥

४१ शिक्षा । हे अर्जुन ! द्वादशी को पुराण का श्रवण और पाठ अयोग्य है क्योंकि वा दिन व्यासजी दिन भर परमेश्वर के पूजन ध्यान में मनको स्थिर करके बैठते हैं कदाचित् कोई पुराण बांचे तो उनका मन ध्यानावस्था में पुराण की ओर चलायमान होता है ॥

४२ शिक्षा । हे अर्जुन ! व्रत के दिन वा इत्तवार को दर्पण में मुख देखना अयोग्य है तिलक लगाने के समय देखे क्योंकि तिलक नारायण का रूप है ॥

४३ शिक्षा । हे अर्जुन ! जिस चारपाई पर

मनुष्य ब्याहता स्त्रीके संग सोवे वाको भाई बैठे वा और किसी को देवे तो महादोष है ॥

४४ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य किसीसे तिल लेके भोजन करे तो बड़ा दोष है यह सुन के अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे दयालु! कदाचित् कोई हितू आदि तिल खवावे तो किस रीति से दोष निवृत्त होय श्रीकृष्णजी ने कहा कि प्रथम तो भोजन ही न करे और करे तो वाके बदले वाको खवायदे नहीं तो ब्राह्मण को देवे क्योंकि तिलदान का बड़ा फल है ॥

४५ शिक्षा। हे अर्जुन! जो नर लंघीकर जल न लेइ अपवित्र रहे सुकर्म जाय ॥

४६ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य मन को रोकके एकचित्त होके प्रीतिभाव सों कथा श्रवण करते हैं सो वैकुण्ठ में नानाप्रकारके सुखपावेंगे॥

४७ शिक्षा। हे अर्जुन! जो कोई किसीकी अमानत धरी हुई को अपने क़ब्ज़े में कर मुकर जाय सो अन्तकाल नरक में जाय दुःख भोगे स्त्री वाकी बांझ हो॥

४८ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य अपनी ब्याहता स्त्री को त्यागे और बजार के नीचे से मैथुनसमय गऊको भगावे तो इस पाप से नरक में जाय और उसकी संतान बेऔलाद रहे॥

४९ शिक्षा। हे अर्जुन! जिस समय क़रज़दार के घर बोहरा आयके अपने रुपये का तक़ाज़ा कर और क्रोध सों सौगन्द खाय के द्वारपर बैठे उस समय क़रज़दार जो अन्नजल खाय तो इस पापसे महादोष होय जन्म भर दरिद्री विपती रहे॥

५० शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने

कुटुम्ब की वा नातेदारों की बुराई करे तो इस पाप के कारण पुत्र का मुँह नहीं देखे ॥

५१ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने मुँहसे अपनी स्तुति करे औरों से अपनी स्तुति सुनके प्रसन्न हो तो अंतकाल नरक में जाय इसे न चाहे ॥

५२ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो बाग के वृक्षन को काटे वा ताल-पोखर को माटी से पाटे और ऊई विद्या पै ध्यान न देवे इस पाप सों नरक में जाय मुक्ति न पावे ॥

५३ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य बैल या घोड़े को बधिया करे तो धन व संतान का सुख न देखे और अगले जन्म में हिजड़ा हो और बड़ों के सुकृत से आप हिजड़ा होय तो उसके पुत्र नपुंसक होकर दरिद्री

होयँ इसके समान और कोई पाप नहीं है ॥

५४ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य रुपये के बदलें धरती को अपने क़ब्ज़े में लावे सो इस पाप के कारण अन्धा होय और संतान का सुख न पावे पुत्र जवान होकर मरजाय ॥

५५ शिक्षा । हे अर्जुन ! पिता और बड़ा भाई और जो उमर में आपसों बड़ो भाई उनको खोटा वचन बोलना महापाप है ॥

५६ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य चरती गाय को जङ्गल में भगावे तो मुक्ति नहीं पावे और निपुत्रे रहे ॥

५७ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामी वा पिता के सङ्ग युद्ध में जाय और कायरता सों उनको छोड़भागे इस पाप से वाको सब शरीर राधपड़के गल जाय ॥

५८ शिक्षा। हे अर्जुन! जिसमनुष्यने अपनी अवस्था भरमें गङ्गाजी वा और तीर्थ में स्नान नहीं किया नातेदारी वा नातेदारन की लज्जा से वाको जीवन संसार में ढोर के समान है इसलिये मनुष्य को अवश्य है जो स्त्री सहित तीर्थस्नान करके कुछ श्रद्धा होय सो पुण्य करे अश्वमेध को फल पावे और वाके पुरुष सदा सुखी रहें यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया हे जगदीश! जिसको नातेदारों की लज्जा वा नातेदारियों से तीर्थस्नान स्त्रीसहित न प्राप्त भया उसको क्या कर्तव्य है? श्रीकृष्णजी बोले जब पूर्णमासी या संक्रान्ति या पुष्य व्यतीपात सिद्धयोग अमावास्या जन्मनक्षत्रादि शुभवार आवें तब स्त्रीसहित किसी नदी या तालावपै कुयें हौद या घरमें स्नान करके श्रद्धा होय सो

पुण्य करे तो यज्ञ के समान फलदायक हो पिछले पापन सों मुक्ति पाय के वैकुण्ठधाम पावे हे अर्जुन! यह वार्त्ता गुप्त है चारवेदन में और देवन में जो तू इस फल का ग्राहक है तासों तेरे आगे कही॥

५९ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य को उचित है कि किसी का पर्दा न उघारे दोष है॥

६० शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य ब्याई हुई गऊ का दूध बछड़ा को न्यारा करिके दुहते और चुखावे नहीं तो इस दोष ते बहुत काल निपुत्रा रहे॥

६१ शिक्षा। हे अर्जुन! अपने कबीले को घायल करे वा और जीव को मारना या उस की बुराई करना बड़ा पाप है॥

६२ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य किसीके

हिस्सेपर क़ब्ज़ा करे तौ अवश्य उसकी स्त्री बांझ होय कुकर्मी होय जन्मभर दरिद्री निपुत्रा रहे और जो पुत्री होयके जीवे तो बिधवा होय पानी देनेवाला कुलमें न रहे अन्धा होय सदा दुःखित रहे ॥

६३ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य चन्द्र सूर्य के ग्रहण में अन्न जल करे वा मूत्रकरे वा पानीभरे तो महादोषहै चन्द्रमा और सूर्य के शापते धन संतान को सुख नहीं पावे और नरक में जाय॥

६४ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य दिशा जायके बचे हुये जलसों हाथ पांव धोवे तो महादोष है उसके कुनबे के मनुष्यों को प्रेत दुःखी करें क्योंकि वह जल प्रेत के भाग को है भूल के ऐसा नहीं करना चाहिये ॥

६५ शिक्षा। हे अर्जुन! जिस मनुष्य के सं-

तान नहीं उसका जीवन संसार में तुच्छ है यह सुन के अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे स्वामी! पुत्रहीन मनुष्य को किसके हाथ का तर्पण पहुँचे श्रीकृष्णजी इस बातपै हँसे और कहा कि हे अर्जुन! ये गुप्तवार्ता जो तेरे आगे कहता हूं देवता भी नहीं जानते इनपै अमल करना यज्ञके तुल्य फलदायक है जो निपुत्रे मनुष्य की स्त्री सुखी न होय और प्रीतिभाव सों मन को शुद्धकरके तर्पण और श्राद्ध करे तो वाके पति को पहुँचे और पुनीत स्त्री के सुकर्मन सों बाकी ७ कुलस्वर्ग में जायँ और उसको कदाचित् अपने पापन के वश नरक में हो तौ मुक्तिपावे॥

६६ शिक्षा। हे अर्जुन! द्वादशी अमावास्या रविवार को शरीर में तेल लगाने का दोष है॥

६७ शिक्षा। हे अर्जुन! गृहस्थी के घर में

पीपल आदि वृक्ष को राखना नहीं चाहिये क्योंकि प्रतिदिन एकवार पितृदेवता. अपने पुत्र के घर में आवते हैं जो वहां ब्राह्मण को मिठाई खाते देखें तो प्रसन्न हो आशीर्वाद देयँ और वृक्ष में और परी, देव, भूत, प्रेतादिक का बास देखकर उनसो डरके घर में आवें नहीं शाप देजायँ तो वह मनुष्य निर्धन होके सदा दुःखी रहे इसलिये घर में वृक्षको न रखना अराडी के तेलका दीपक पीपलके नीचे बालना अशुभ है ॥

६८ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य देह बड़ी कठिनाई वा बड़े जप तप के फलसे प्राप्त होती है यह देह पाई अहंकार की फांसी गले में मेलनी अयोग्य है देखो सदा शिर के बाल तो मौतके हाथ में रहते हैं और न जानिये किस

समय शरीर सों जीव न्यारो होजाय तिस पर मनुष्य यह कि अभी लड़का है जवानी बुढ़ापे भूल है जो क्षणभङ्ग देह में झूठा भरोसा करे मनुष्य को उचित है जो क्रोध लोभ को त्याग करे अहंकार और बुराई सों अलग रहे ईश्वर ने जो दिया है उसमें संतोष राखे हर्ष में हानि लाभ भले बुरे को समान जानके सर्व जीवन में पूर्णब्रह्म परमेश्वर को एकसां देखे और सदा सच्चिदानन्द नारायण को ध्यान स्मरण में मन लगाये महाप्रसन्न रहे क्योंकि अन्त-काल माता पिता भाई नहीं सहाय करे सुकर्म किये सहाय होते हैं ॥

६९ शिक्षा। हे अर्जुन! जिस मनुष्यने पीपल में प्रतिदिन जल नहीं चढ़ाया और महादेव का व्रत पूजन नहीं किया उसको शरीर हारके

समान है सदा निर्धन और दुःखी रहे यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया हे वासुदेव ! किसी को नित्य पूजन नहीं प्राप्त होय. तौ कहा करे श्रीकृष्ण ने कहा शनिवार को वृक्षराज पीपल की जड़में ब्रह्मा त्वचा में विष्णु शाखा में महादेव पात पात में देवतों का बास होता है और सब तीर्थन सहित पीपल को पूजन करते हैं इसलिये जो मनुष्य हर शनैश्चर को नियम करके पीपल को पूजन और परिक्रमा करता रहे और कभी २ पीपल के नीचे ब्राह्मण को भोजन करावे आप भोजन करे इस पुण्यसे देवताओं के आशीर्वाद पाइके धन संतान सुख पावे मनोरथ पूर्ण होय कदाचित् पुरुष व्रत न राखसके तो उसकी स्त्री इसी रीति सों व्रत राखे और महादेव को पूजन पतिसहित

करे तो इतने पुण्य हो जो लिखने में न आवे यह बार्ता सुनके अतिप्रसन्नता सों हाथ जोड़ अर्जुन बोला कि हे महाराज! इसके सुनने से बड़ा आनन्द होता है कृपाकरि और आज्ञा कीजै श्रीकृष्णजी ने कहा कि हे अर्जुन! यह पुनीत बार्ता वेदोंकी तेरे आगे कही और अब कहताहूं चित्त लगाके सुन ॥

७० शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य स्नान करके गूलर और महुवा के वृक्षतले जाय तो चौथाई फल वृक्षको मिले यह सुनके अर्जुन ने कारण पूछा श्रीकृष्णजी ने कह्यो कि नृसिंह अवतार हिरण्यकशिपु दैत्य को पेट नखों से फाड़डाला तब नृसिंहजी के नखमें ज्वाला उठी सो वहां महुवा और गूलर के वृक्षही दृष्टि परे तब दोऊ पंजा वृक्षन के लगाय नखन की

ज्वाला मिटाई ताही समय नृसिंहजी ने कृपा-दृष्टि सों उनको आज्ञा की जो स्नान करके नीचे आवें वाके स्नान को चौथाई फल वृक्षों को मिले अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे स्वामी! जो मनुष्य भूलके चलाजाइ तो कैसे वाको फल बचै श्रीकृष्णजी ने कहा कि तीनवार नृसिंहजी को नाम ले तो वृक्षन को फल न पहुँचे ॥

७१ शिक्षा। हे अर्जुन! स्नान करके चारपाई पर बैठने से बाहर जाके औरों से मिलाप करने से स्नान को फल जातारहे स्नान करके कुछ खायके जहां चाहे तहाँ जाय तो कुछ दोष नहीं॥

७२ शिक्षा। हे अर्जुन! आम के वृक्ष तथा बाग़ के वृक्ष काटने का दोष दश ब्रह्महत्या के समान है औ बाग़ लगाने का पुण्य हज़ारयज्ञ के समान है इसलिये उचित है कि संपूर्ण बाग़

लगायबे की सामर्थ्य नहीं होय तो मेवाके पांच वृक्ष सुठौर में लगाये कि जीवन सफल करे क्योंकि वृक्ष लगावने का पुण्य अश्वमेध यज्ञ के समान है जब मेह बरषै उन वृक्ष के पत्तान सों जल की बूंद पृथ्वीपै पड़े उनका पुण्य होता है जैसे पतिव्रता स्त्री को अपने पतिकी सेवा से पुण्य फलदायक है और इस अपार पुण्य की महिमा लिखने में नहीं आवे जो लगावे उसके पांच पुश्त के पुरुषा वैकुण्ठ में बास पावें ॥

७३ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य तुलसीजी को वृक्ष अपने घरमें राखे और प्रतिदिन स्नान करके जल सींचे चन्दन, अक्षत, पुष्पसों पूजन करे और रात्रि को दीपक बारे तो उसके घरमें यम के दूत नहीं आवें और लक्ष्मी का प्रकाश रहे यह अश्वमेध यज्ञ के समान फल देता है

जो कदाचित् नित्य नहीं बने तो कार्त्तिक और अगहन में तो प्रतिदिन पूजनकरे और आंवले के वृक्षतले जाय के ब्राह्मण को भोजन करावे तो नरमेधयज्ञ के समान फल हो परन्तु इतवार के दिन आंवले को न पूजे ॥

७४ शिक्षा। हे अर्जुन! क्वांरा मनुष्य तर्पण वा श्राद्ध करे उनके पितरों को नहीं पहुँचे ॥

७५ शिक्षा। हे अर्जुन! जिसके घरमें बांझ स्त्री हो उसको संसार में नरक है वा स्त्री के हाथ का अन्न जल खाइये तो महादोष है इस पाप सों मुक्ति पावे नहीं और उस जन्म में उसके मुख सों दुर्गन्ध आवे यह सुनके अर्जुनने प्रश्नकिया कि जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्ब में या नाते में होय और कुछ खवावे तो कैसे पापसों मुक्ति हो श्रीकृष्णजीने कहा जो भोजन करनेके समय

प्रथम अनन्तशक्ति परब्रह्म को नाम लेके प्रार्थना करे कि अघमोचन अधमोद्धारण है फिर एक ग्रास पै ज्योतिस्वरूप को नाम लेके जल पृथ्वी पै डारे और भोजनकरे तो दोष नहीं धन संतान बढ़े ॥

७६ शिक्षा। हे अर्जुन! कोई मनुष्य पानी का लोटा वा घण्टी किसी दूसरे के लिये और वाके हाथसे लेके पिये तो दोष है क्योंकि इसीलिये मनुष्य को उचित है कि दूसरे के हाथसे घण्टी ले पृथ्वी पै धरके आप पिये तो दोष नहीं लगे॥

७७ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य जिस पात्र में भोजन करे वाको मांजे नहीं और बची हुई जूठनको वहीं पात्रमें राखे तो महादोष है अन्नके शापते वह मनुष्य सदा दरिद्री और दुःखी रहे॥

७८ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने घर और आंगन में प्रतिदिन बुहार झाड़ के सफा नहीं राखे सो इस महादोष सों पितृ-देवताओं के शाप सों छः महीने में निर्द्धन होय और यह बात भी जाननी चाहिये पिता के पापन सों पुत्र भी दरिद्री होय और स्त्री के पापन सों पति वैकुण्ठ वा नरक में जाय ॥

७९ शिक्षा। हे अर्जुन ! नदी और कुवां को घर में ताते जल सों स्नान करनो सुफल नहीं होय यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया कि नदी हौद कुवां नहीं मिले तो क्या करना उचित है ? श्रीकृष्णजी ने कहा ताते जल में हाथ न डारे तो गङ्गाजल के समान है और हाथ डारे तो मद्य के समान है हे अर्जुन ! बातन में ध्यान धरनो बड़ो कठिन है परन्तु जो कोई

भगवान् को भक्त बुद्धिमान् है सोई मन को शुद्धकरके ध्यान धरता है यह सुनके अर्जुन ने बड़ा शोचकिया और श्रीकृष्ण के चरणारविन्द में बिनती की हे सच्चिदानन्द, वासुदेव ! इन बातों में कुछ एक तो असल में आई है कुछ नहीं आई सो कैसे कर अन्तसमय मुक्ति पावेगा श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शोचसमुद्र में डूबा देख अति दयालुता सों धिरासा देके आज्ञा की कि तू शोच मत कर धैर्य करिके ध्यान धर इन बातन सों कटै पाप निर्द्धार ॥

८० शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य स्नान करके तिलक नहीं लगाते उनको न्हायबो पशु के समान है कदाचित् ब्राह्मण खौर तिलक करे तो उसको दण्डवत् करनी अयोग्य है सो उसके माथे पै ऐसो तिलक देखिबो बड़ा दोष

है और जो सदा तिलकधारी को देखके यम के दूत जरते हैं और कुढ़ते हैं ॥

८१ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने मनको संकल्प विकल्प करके निशिदिन संकल्प शोचसमुद्र में बूड़्यो राखे सो सुखको स्वप्न में भी नहीं देखे इसलिये मनुष्य को उचित है होतव्य पै दृढ़ करके सुख दुःख को समान जाने और ईश्वरके स्मरण भजन में सदा मन को प्रसन्नता से राखे ॥

८२ शिक्षा। हे अर्जुन! मनुष्य की देह बहुत कठिनाई से प्राप्त होती है कदाचित् दही का भोजन प्रतिदिन प्राप्त नहीं होय तौ पौर्ण-मासी को अवश्य भोजन करना चाहिये याको महापुण्य है ॥

८३ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य मसूर,

बैंगन, लहसुन खाता है वाको नरक में ठौर नहीं मिले क्योंकि इनके बीज पेट में १२ दिन लौं रहते हैं दिन २१ में जो मृत्यु होजाय तो नरक में बास पावे यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे त्रिलोकीनाथ ! किसी ने इनमें से एक वस्तु खाई हो तो पीछे मृत्यु आ पहुँची तो यह पाप कैसे जाय श्रीकृष्णजी ने कहा गङ्गा-जल पीवे तो वह दोष वस्तु पेट से निकल जाय दोष निवृत्त होय ॥

८४ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने घर में एक दीपक आठों पहर जगाये राखे किसी समय बढ़ने न दे तो वाके पितृदेव अति प्रस-न्नता सों आशीर्वाद देयँ और अगले जन्म में भगवान् की कृपा सों धन संतान का सुख पावे अन्तसमय वैकुण्ठधाम पावे ॥

८५ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य भोजन करके बची भई जूठन को दूसरी बार खाय अथवा और कोऊ खवावे तो इस महापापसों अवश्य दरिद्री होय॥

८६ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य रात्रि को अँधेरे में भोजन करे अथवा भोजन करते में दीपक बढ़जाय और भोजन कियेजाय सो इस दोष के कारण धन संतान को सुख नहीं देखे क्योंकि ऐसे समय का भोजन प्रेत के संग भोजन करने के समान है॥

८७ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने शिरकी बँधी हुई पाग किसी को बख़्शे तो बड़ा दोष है क्योंकि उसकी बुद्धि घट के लेनेवाले की बुद्धि बढ़ती है॥

८८ शिक्षा। हे अर्जुन! दक्षिण की

ओर पांव करके सोवना बड़ा अशुभ है ॥

८९ शिक्षा । हे अर्जुन ! लड़की चार वर्ष लों पार्वती है ६ वर्ष लों देवकन्या ९ वर्ष लों कन्या कहावै है इन अवस्थाओं में लड़की का ब्याह करे तौ यज्ञ के समान है और जो १२ वर्ष से अवस्था बीते पै ब्याह करे तो महादोष है ॥

९० शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य शिर पै अँगौछा बांधे और अकच्छ रहे तो उसके सगरे पुण्य नाश होयँ और पापकी फांस में फँस और अन्तकाल नरक में जाय और उसके पितृदेवता नरकवासी होयँ क्योंकि उसके पर धरनो ऐसो है कि जैसे गऊको पृथ्वी पै डार उस पै पांव धरनो ॥

९१ शिक्षा । हे अर्जुन ! बासी जलसों तर्पण करनो लहूके समान है या पाप के कारण नरक

में जायके राध लोहू के भरे हुये कुण्डमें बासकरें॥

९२ शिक्षा। हे अर्जुन! हाथ, पांव, गरे में सोने को राखना पुनीत है क्योंकि स्नान करने के समय जो जल सोने से लग के शरीर पर पड़े तो गङ्गाजल के समान है॥

९३ शिक्षा। हे अर्जुन! जो गङ्गाआदि तीर पै न्हाये पहले धोती को धोवनो महादोष है॥

९४ शिक्षा। हे अर्जुन! जो कुटुम्ब में से कोई मनुष्य तीर्थ पै जाय वाको चाहिये प्रथम स्नान करे फिर तर्पण को फल प्राप्त होय॥

९५ शिक्षा। हे अर्जुन! जो बीमार गङ्गाजी या और तीर्थ पै मृत्यु पावे वाको अधजल करके क्षेत्र में बहावे तो महादोष है और अन्त में नरकवासी होय और वाकी भस्म करके ७ दिन भस्म की चौकसी करें गऊके सिवाय

कुत्ता, बिल्ली, गधा आदि चौपाये और स्त्री की परछाहीं भस्मी पै पड़े नहीं देह फिर आठवें दिन स्नान करके भस्मी को क्षेत्र में पधरावे और क्षेत्र की मृत्तिका सों शुद्धकरे तो जगत् के सर्वतीर्थन के स्नान और बड़े २ यज्ञ को फल पावे और मृतक वैकुण्ठधाम जाय दाहक को महाआशीर्वाद देता रहे ॥

९६ शिक्षा । हे अर्जुन ! मेह वर्षते में सूर्य उदय होयँ तो वा समय का स्नान गङ्गास्नानके समानहै जो देवताओं को भी नहीं प्राप्त होयहै॥

९७ शिक्षा । हे अर्जुन ! सूर्यास्त पै भोजन करनो जल पीवनो महादोष है क्योंकि वा समय सूर्य जी और दैत्यों में युद्ध होता है इस लिये मनुष्य को अवश्य है कि संध्यासमय त्रिलोकीनाथ के ध्यान स्मरण के सिवाय और

कोई काम न करे अर्थात् सूर्य को जलार्पण न करे सो बहुत वर्ष निर्द्धन और दुःखी रहे और इस पर भी ज्ञान करनो चाहिये कि संध्या समय चार घड़ी दिन सों चारघड़ी रात गये लौं प्रातःकाल भी इसी तरह सोवना महा अशुभ है जो इन दोनों समय परमेश्वर के ध्यान स्मरण में मन लगाये रहे और पुराण को पाठ करे तो समस्त पाप सों मुक्ति पाइ के सुख स्थान में बास पावे शुभ संतान हो ॥

९८ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य हाथ पै धरके रोटी खाय तो थोड़ेही काल में दरिद्री होजाय ॥

९९ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनष्य और के धन संतान को देख खुनसाय तो वह इस लोक में निर्द्धन होके परलोक में नरकबास

पावे और अगले जन्म में निपुत्री होय ॥

१००. शिक्षा। हे अर्जुन! जो नरके सुत न हो सो यां संसार में सुख न पावे अन्त में नरक-बासी हो दूजे जन्म निपुत्री रहे ॥

१०१ शिक्षा। हे अर्जुन! जिस स्त्री के बालक पैदा होय उसके हाथ का ४५ दिन तक अन्न जल खाय तो दोष है पितर अधोगति को जायँ यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे दीनदयालु! जो मनुष्य निर्द्धन और अकेला होय तो किस प्रकार या दोषते बचे श्रीकृष्ण बोले कि १३ दिन २३ दिन पीछे स्वच्छ श्रीगङ्गाजलसों स्नान करके जो सामर्थ्य होय सो पुण्यदान करे तो दोष नहीं यह शिक्षा सुनके अर्जुन बोल्यो हे कृपासिन्धु! यह बार्ता सुनके चित्तमें दीपक के समान उजियारा

भयो और कृपा करके कुछ आज्ञा कीजिये ॥

१०२ शिक्षा । हे अर्जुन! मनुष्य चित्तकी प्रसन्नता सों कुछ दान पुण्य करे तो अधिक फल पावे और जो क्रोध करे तों अथवा दान लेनेवाले को दुःखी करे तो पुण्य निष्फल जांय और पातकी होय ॥

१०३ शिक्षा । हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने बेटे को किसी की गोद देवे तो उस पुत्र के हाथको जल उसको नहीं पहुँचे और कदाचित् दिये पुत्रको फेरलेवे वह पुत्र जवान होके मर जाय या उसके बदले दूसरा पुत्र मरे और अगलेजन्म में धन संतान को सुख नहीं पावे और नरकबासी होय यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगदीश! जो कोई अज्ञानी नर दिये पुत्र को फेरलेवे तो इस पाप से कैसे

मुक्ति पावे? श्रीकृष्णजी ने कहा कि वह मनुष्य अपनी स्त्री और पुत्रसहित श्रीगङ्गाजी में स्नान करके पीली, लाल, धूमरी, धूसरी रङ्गकी गऊ दूधकी ब्राह्मण को पुण्य करे और परमेश्वर को दण्डवत् करके अपराध क्षमा करावे तो इस पापसे मुक्ति पावे पुत्र के हाथ का दिया पहुँचे॥

१०४ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य जिस समय युद्ध करते २ एक मनुष्य असमर्थ होके दूसरे की शरण आवे उस समय कदाचित् वह मनुष्य शरणागत को जीवसों मारे अथवा घायल करे तो इस पाप से उसके पुत्र जवान होयके मरें निर्द्धन हो स्त्री बांझ हो अगले जन्म में॥

१०५ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य कागज़ अथवा लकड़ी पै मनुष्य आदि का

चित्र बनावे तो इस पापसे इसलोक या परलोक में धन संतान का सुख नहीं देखे और आंखों से अन्धा होय ॥

१०६ शिक्षा । हे अर्जुन ! जिस मनुष्य के वचन उच्चारण में थूक बाहर आवे दूसरे पर पड़े तो अगले जन्म शूकर की देह पावे अन्त नरक में जाय ॥

१०७ शिक्षा । हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामी की आज्ञा को सुनके ध्यान नहीं धरे सो महादुःखी नरक में जाय क्योंकि स्वामी की अवज्ञा करनी महापाप है यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया हे यदुनाथ ! कदाचित् स्वामी ऐसी चाकरी फरमावे तो सेवक से नहीं बन पड़े तो कैसे पापसों मुक्ति पावे ? श्रीकृष्णजी ने कहा कि जो ऐसी कठिन चाकरी सेवक से न

बनपड़े तो जिस दिन तलक से स्वामी की आज्ञा टारी वा दिनसे जबलों स्वामी दूसरी बार किसी काम की आज्ञा करे और सेवक उस काम को मन लगाय करे उतने दिन की तलब स्वामी सों नहीं लेइ तो यह दोष दूर होय कदाचित् उतने दिनकी तलब लेइ तो धनको सुख नहीं पावे और अन्तकाल यमके दूत वाको बड़ा दुःख देके उस तलब की उलटी फेरलेइ यह सुन अर्जुन ने पूछा कि हे जगदीश! सेवक सों स्वामी की चाकरी में चूक पड़े कदाचित् वह कबीलदार और निर्द्धन होय तो वाकी तलब फेर देनेकी सामर्थ्य न होय तो कैसे या दोष से मुक्ति पावे श्रीकृष्णजी ने कहा कि उस तलब में से चौथाई पुण्य करके परमदयालु परमेश्वर से अपना अपराध क्षमा करावे तो

या दोषते मुक्ति पावे और सदा सुखी रहे ॥

१०८ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य हवेली, तालाब, कुवां आदि कोई मकान बनावे और अधबने मकान की भीत या धरती पै बैठके भोजनकरे तो महादोष है इसलिये मनुष्य को उचित है जब सम्पूर्ण मकान बनचुके तब स्त्री सहित वाकी प्रतिष्ठा करिके परिक्रमा करे और ब्राह्मणन को भोजन करावे गोदान करे फिर कुटुम्ब सहित आप भोजन करे इस रीति से करे तो अश्वमेध के समान फल हो और परम सुख पावे॥

१०९ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य तीर्थ-यात्रा को जावे और रास्ते में किसी स्त्री के मिहमानी खाय तो महादोष से जन्मभर संसार के पदार्थ से विमुख रहे और यात्रा निष्फल

जाय क्योंकि यात्रा को फल मिहमानीवाले को प्राप्तहोय यह सुनके अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगतगुरु ! रास्तेमें कोई भाई या नातेदार मिले और मिहमानी करे तो किस प्रकार दोष दूरहोय श्रीकृष्णजीने कहा जाती बिरियां किसी का न खाय आतीबिरियां मिहमानी खाय तो दोष नहीं परन्तु तीर्थ देवस्थान पै भूलकर किसी भाई या नातेदारकी मिहमानी न खाय कदाचित् वे लोग हठ करें तो स्नान यात्रा सों निश्चिन्त होयके तीर्थ की परिक्रमा करके चलती बिरियां मिहमानी खाय वासों बीस गुनी ब्राह्मण को खवावे तो दोष जाय यात्रा सुफल होय ॥

११०।१११ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य पक्षियों के घोसला में से छोटे २ बच्चों को बाहर निकाले तो या जन्म में दरिद्री होय और वाके

पुत्र जवान होयके मरें और अन्तकाल नरक में जाय फिर अगलेजन्म में धन संतान को सुख न पावे क्योंकि छूयेते पक्षी फेर पाले नहीं हित उठजाय भूखे प्यासे होके मरजाय इसलिये यह अपराध उस मनुष्य के शिर चढ़ी ॥

११२ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य गऊको दोहती समय बाल टूटें तो दोष है याते बिन छाने ताती करे या पीवे तो दरिद्री होय क्योंकि या पापके समान और कोई पाप नहीं इसलिये मनुष्य को अवश्य है कि दूध को छानके ताती करके पीवे ॥

११३ शिक्षा। हे अर्जुन! जो स्त्री या पुरुष रोते हुये बालक को मारे तो नरक में जाय और सब पदार्थ से विमुख होके निपुत्री रहे और कदाचित् पुत्र होय तो मरजाय इस पाप

से उसके पितृदेव वैकुण्ठ से नरक में जायँ ॥

११४ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य मुँह धोये बिन पान या दूधआदि कुछ खाय और स्वामी की बस्तु को मोलदिये बिन ले खाय तो इस जन्ममें दुःख हो ॥

११५ शिक्षा। हे अर्जुन ! रूख को कच्चो फल तोड़नो दोष है फल पकजाय जब तोड़े तो दोष नहीं ॥

११६ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य चाकरी की तलब और नेगिनका नेग नहीं देवे तो इस लोक में भलाई नहीं पावे औ इस पाप सों जन्म भर दुःखी औ निपुत्री होकर अन्तकाल नरक में जाय कदाचित् वाके पितर स्वर्गबासी होयँ तो नरक में बसैं ॥

११७ शिक्षा। हे अर्जुन ! जो मनुष्य दान

की वस्तु को पात्र में मेलके और पात्र को हाथ में धरके संकल्पकरे और ब्राह्मण 'स्वस्ति' बोल देवे तो हाथ और पात्र संकल्प में आ जायँ इसलिये वह पात्र भी देदेना चाहिये और हाथ के बदले में जबलों सुवर्ण या चांदी या तांबा को हाथ बनवाके ब्राह्मण को नहीं दे तबलों जो खाना पीना या सुकर्म हाथ से करे सो फल-दायक नहीं होय अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे यदुनाथ ! जिसको हाथ और पात्र देने की सामर्थ्य न होय तो किस प्रकार इस पापसों मुक्त हो श्रीकृष्णजी ने कहा कि मनुष्य को चाहिये जो अपढ़ और मूर्ख ब्राह्मण को श्रद्धा हो तो दूरही से दे दे और पुण्यदान का संकल्प करे तो विद्यमान करे नहीं तो दोष है ॥

११८ शिक्षा। दो० ॥ जा नर की नारी मरे,

करै दूसरो ब्याह। ना देखे संसार में, सुख संपति सुख आह॥ यह सुन अर्जुन ने कह्यो, हे घनश्याम सुजान। याको कारण कौन है, कहिये सुख की खान॥ कहो कृष्ण तेहीं हितू, ध्यान धरो मनमाहिं। ब्याह करै सुतहीन नर, तौ कछु दूषित नाहिं॥ पै जिस नरके पुत्र हो, बहुरि करै वह ब्याह। पावे दुख संसारमें, बूड़ समुद्र अथाह॥ चौ० ॥ जब दूजी घर नारी आवै। प्रथम नारिके पुत्र न भावै॥ जो माता सम करै न प्रीती। रहै निपुत्री जगमें भीती॥ बहुरि नरक में जाकर परई। बहुत प्रकार परम दुखरई॥ दो० ॥ फिर नारी अरु नर दोऊ, पावैं शूकर देह। या भङ्गी की देह धरि, करैं खेह से नेह॥

११९ शिक्षा। दो०॥ हे अर्जुन ज्वारी जुवा,

करै खेलसों प्रीति। धनको सुख पावै नहीं, जग में हरत प्रतीति ॥ अन्त नरक में जायके, पावे कष्ट अनेक। भाटदेह फिर पाइकै, बोलै झूठ अनेक ॥ सातबार घर भाटके, ले वह नर अवतार। बहुरि नरकमें जायके, पावे दुःख अपार ॥ तासों हे अर्जुन हितू, जूवा को ब्योहार। भूल चूक कीजै नहीं, यह सुन बारम्बार ॥

१२० शिक्षा। चौ० ॥ भाट भांड़ औरौ कल्लार। इन तीनों को देकै द्वार ॥ भांड़ लेइ करि कै झकझोरी। औरनके ऐबन को भोरी ॥ भाट बुराई औरन गाय। करै भलाई दाता पाय ॥ करै बुराई पास कलार। जो बैठे औ खावे चार ॥ लाजकाज गृहबुद्धि बिचार। तातें यह उन में सरदार ॥ दो० ॥ इन तीनोंमें एकको, जो धनदे दातार। पावै अगले जन्ममें, वाहीको अवतार॥

घरघर फेर उदर भरै, धन नहिं आवे पास।
अन्तकाल फिर पाइहैं, घोर नरक में बास॥
यह सुन अर्जुन ने कियो, बीते पै अफसोस।
पायँ पर्यो घनश्यामके, रहो नहीं कछु होस॥
सो०॥ कह्योश्यामसुनितात, हौ तजि पिछलेदिननकी।
हृदय धरो मो बात, जासु कल्पना सबनकी॥

१२१ शिक्षा। हे अर्जुन! दो०॥ दिशा जाय पुनि आयकै, दान करै जो कोय। फल ताको पावै नहीं, नरकनिवासी होय॥

१२२ शिक्षा। दो०॥ अर्जुन जो काटैनहीं, चौथे दिन नख बीस। सप्तम दिन बनवाबई, हज्जामत मुखशीस॥ उन हाथनसों शुभकरम, खाना पीना भाय। जो कारज वह नर करै, सो निष्फल होजाय॥

१२३ शिक्षा। हे अर्जुन! दो०॥ चौदस

मावस तिथि मिलै, मङ्गल अरु रविवार । जो नर इनमें तेल लै, मलै शीशके बार ॥ कटवावै नख आदिसो, महापातकी होय । शापदेवता पायकै, दुखी दरिद्री होय ॥ इन बारनके देवता, न्यारे न्यारे जान । तिनकी जो पूजा करै, पावै सो सन्मान ॥ सुत संपतिको परम सुख, पावै या जगमांह । अन्तकाल वैकुण्ठ में, बैठे सुख की छांह ॥

१२४ शिक्षा । दो० ॥ जो नर रोटी आज की, अगले दिनमें खाय । सदा रहे बेकार वह, अन्त नरक में जाय ॥ रहैं सुखी संसार में, उसके पुत्र निदान । यह सुन अर्जुन ने कह्यो, हे घनश्याम ! सुजान ॥ जो कुंनबी नरके बचे, अस्तु प्रातकी आज । तो कैसें या पापसों, पावै मुक्ति दराज ॥ कह्यो श्यामने हे हितू ! मीठाई प-

कवान। खावे तो दूषित नहीं, रोटीमें मतजान॥
इन बासी रोटीन को, खानो दुख उपजाय।
पाप पुराय अरु शाप दे, वह नर सुख ना पाय॥
चार व्याध उत्पन्न हो, जामें बासी खाय।
आदि बुद्धि की हानि हो, दूजे तन घटजाय॥
तीजो अरु बलहीन हो, चौथे खोजी खाट।
इतने लक्षण पाइकै, होवै बारोबाट॥

१२५ शिक्षा। हे अर्जुन! जो मनुष्य इतनी बातनको अपनेचित्तसों कभी न्यारी नहीं करे तो इसलोक और परलोक में परमसुख पावे प्रथम स्वामी की सेवा में हँसमुख और निर्लोभ रहे दूजे चाकर के मन को दुःखी न राखे तीजे क्रोध नहीं करे॥

इति श्रीज्ञानमाला समाप्त॥